Duaa Mangne Ke 17 Madani Phool (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 282
Weekly Booklet : 282

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब ''मदनी पन्ज सूरह'' की एक क़िस्त बनाम

दुआ़ मांगने के 17 मदनी फूल

सफ़्हात 22

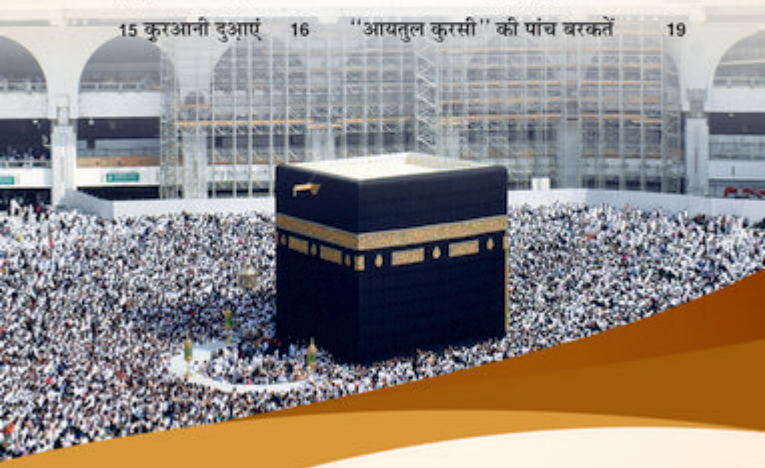

दुआ़ के तीन फ़ाएदे 02
तीन आदमियों की दुआ़ क़बूल नहीं होती 07
15 क़ुरआनी दुआएं 16
''आयतुल कुरसी'' की पांच बरकतें 19

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **दुआ मांगने के 17 मदनी फूल**
सिने त़बाअ़त : जुमादल आख़िर **1444** हि., जन्वरी **2022** ई.
ता'दाद : 000
नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

दुआ मांगने के 17 मदनी फूल

येह रिसाला (**दुआ मांगने के 17 मदनी फूल**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E Mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब ''मदनी पन्ज सूरह''
सफ़ह़ा 182 ता 202 और 14 ता 15 से लिया गया है।

दुआ मांगने के 17 मदनी फूल

दुआए अ़त्तार या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला : **''दुआ मांगने के 17 मदनी फूल''** पढ़ या सुन ले उन की नेक व जाइज़ मुरादों पर रह़मत की नज़र हो, उस की दुआएं क़बूल हुवा करें और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आ़ख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ मुझ पर सो बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़्लूक़ में तक़्सीम कर दिया जाए तो सब को किफ़ायत करे। (حلیۃ الاولیاء، 8/49، حدیث:11341)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुआ की अहम्मिय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुआ मांगना बहुत बड़ी सआ़दत है, क़ुरआन व अह़ादीसे मुबारका में जगह जगह दुआ मांगने की तरग़ीब दिलाई गई है। एक ह़दीसे पाक में है : ''क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारा रिज़्क़ वसीअ़ कर दे, रात

दिन **अल्लाह** पाक से **दुआ** मांगते रहो कि **दुआ** मोमिन का हथियार है।" (مسند ابی یعلیٰ، 2/201، حدیث:1806)

दुआ दाफ़ेए बला है

मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : "बला उतरती है फिर दुआ उस से जा मिलती है। फिर दोनों क़ियामत तक झगड़ा करते रहते हैं।" (مستدرک، 2/162، حدیث:1856)

इबादात में दुआ का मक़ाम

हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه इर्शाद फ़रमाते हैं : "इबादात में दुआ की वोही हैसिय्यत है जो खाने में नमक की।"

(تنبیہ الغافلین، ص216، حدیث:577)

दुआ के तीन फ़ाएदे

अल्लाह पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मुसल्मान ऐसी दुआ करे जिस में गुनाह और क़त्ए रेहमी की कोई बात शामिल न हो तो **अल्लाह** पाक उसे तीन चीज़ों में से कोई एक ज़रूर अ़ता फ़रमाता है : ﴾1﴿ या उस की दुआ का नतीजा जल्द ही उस की ज़िन्दगी में ज़ाहिर हो जाता है। या ﴾2﴿ **अल्लाह** पाक कोई मुसीबत उस बन्दे से दूर फ़रमा देता है। या ﴾3﴿ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है। एक और रिवायत में है कि बन्दा (जब आख़िरत में अपनी दुआओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) न हुई थीं तो) तमन्ना करेगा, काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ क़बूल न होती।

(مستدرک، 2/163، 165، حدیث:1859، 1862)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **दुआ** राएगां तो जाती ही नहीं। इस का दुन्या में अगर असर ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज्रो सवाब मिल ही जाएगा। लिहाज़ा **दुआ** में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

"या अ़फ़ुव्वु" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 मदनी फूल

﴾1﴿ **पहला** फ़ाएदा येह है कि **अल्लाह** पाक के हुक्म की पैरवी होती है कि उस का हुक्म है मुझ से दुआ मांगा करो। जैसा कि कुरआने पाक में इर्शाद है : ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (پ24، المؤمن:60) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा।

﴾2﴿ **दुआ** मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात **दुआ** मांगते। लिहाज़ा दुआ मांगने में **इत्तिबाए सुन्नत** का भी शरफ़ ह़ासिल होगा।

﴾3﴿ **दुआ** मांगने में इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **दुआ** की अपने ग़ुलामों को ताकीद फ़रमाते रहते।

﴾4﴿ **दुआ** मांगने वाला आ़बिदों के ज़ुमरे (या'नी गुरौह) में दाख़िल होता है कि दुआ बज़ाते ख़ुद एक इ़बादत बल्कि इ़बादत का भी मग़्ज़ है। जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :- اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ **तरजमा :** दुआ इ़बादत का **मग़्ज़** है।

(ترمذی، 5/243، حدیث:3382)

﴾5﴿ **दुआ** मांगने से या तो उस का गुनाह मुआ़फ़ किया जाता है या दुन्या ही में उस के मसाइल ह़ल होते हैं या फिर वोह **दुआ** उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है।

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? दुआ मांगने में **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब माहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त भी है, दुआ मांगना सुन्नत भी है, दुआ मांगने से इ़बादत का सवाब भी मिलता है नीज़ दुन्या व आख़िरत के मुतअ़द्दद फ़वाइद ह़ासिल होते हैं। बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि वोह दुआ की क़बूलिय्यत के लिये बहुत जल्दी मचाते बल्कि مَعَاذَاللہ ! बातें बनाते हैं कि हम तो इतने अ़रसे से दुआएं मांग रहे हैं, बुज़ुर्गों से भी दुआएं करवाते रहे हैं, कोई पीर फ़क़ीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ते हैं, वोह अवराद पढ़ते हैं, फुलां फुलां मज़ार पर भी गए मगर **अल्लाह** पाक हमारी ह़ाजत पूरी करता ही नहीं। बल्कि बा'ज़ येह भी कहते सुने जाते हैं : "न जाने ऐसा कौन सा गुनाह हो गया है जिस की हमें सज़ा मिल रही है।"

नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़त़ा ही नहीं !

इस त़रह़ की "भड़ास" निकालने वाले से अगर दरयाफ़्त किया जाए कि भाई ! आप नमाज़ तो पढ़ते ही होंगे ? तो शायद जवाब मिले, "जी नहीं।" देखा आप ने ! ज़बान पर तो बे साख़्ता जारी हो रहा है, "न जाने क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !" और नमाज़ में इन की ग़फ़्लत तो इन्हें नज़र ही नहीं आ रही ! गोया नमाज़ न पढ़ना तो (مَعَاذَاللہ) कोई गुनाह ही नहीं है ! अरे ! अपने मुख़्तसर से वुजूद पर ही थोड़ी नज़र डाल लेते, देखिये तो सही ! सर के बाल अंग्रेज़ी, अंग्रेज़ों की त़रह़ सर भी बरह्ना, लिबास भी अंग्रेज़ी, चेहरा दुश्मनाने मुस्त़फ़ा आतश परस्तों जैसा या'नी ताजदारे रिसालत

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे से ग़ाइब ! तहज़ीब व तमद्दुन इस्लाम के दुश्मनों जैसा, नमाज़ तक भी न पढ़ें । ह़ालां कि नमाज़ न पढ़ना ज़बर दस्त गुनाह, दाढ़ी मुंडाना ह़राम और दिन भर में झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी, बद निगाही, वालिदैन की ना फ़रमानी, गाली गलोच, फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे वग़ैरा वग़ैरा न जाने कितने गुनाह किये जाएं । लेकिन येह गुनाह "जनाब" को नज़र ही न आएं । इतने इतने गुनाह करने के बा वुजूद शैत़ान ग़ाफ़िल कर देता है । और ज़बान पर येह अल्फ़ाज़े शिक्वा खेल रहे होते हैं :

"क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !"

जिस दोस्त की बात न मानें

ज़रा सोचिये तो सही ! आप का कोई जिगरी दोस्त आप को कई बार कुछ काम बताए मगर आप उस का काम न करें । और कभी आप को अपने उसी दोस्त से काम पड़ जाए तो ज़ाहिर है आप पहले ही सहमे रहेंगे कि मैं ने तो इस का एक भी काम नहीं किया अब वोह भला मेरा काम क्यूं करेगा ! अगर आप ने हिम्मत कर के बात कर के भी देखी और वाक़ेई उस ने काम न भी किया तब भी आप शिक्वा नहीं कर सकेंगे क्यूं कि आप ने भी तो अपने दोस्त का कोई काम नहीं किया था ।

अब ठन्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि **अल्लाह** पाक ने कितने कितने काम बताए, कैसे कैसे अह़काम जारी फ़रमाए । मगर ख़ुद उस के कौन कौन से अह़काम पर अ़मल करते हैं ? ग़ौर करने पर मा'लूम होगा कि उस के कई अह़कामात की बजा आवरी में निहायत ही कोताह वाक़ेअ़ हुए हैं । उम्मीद है बात समझ में आ गई होगी कि ख़ुद तो अपने परवर्दगार

के हुक्मों पर अ़मल न करें। और वोह अगर किसी बात (या'नी दुआ़) का असर ज़ाहिर न फ़रमाए तो शिक्वा, शिकायत ले कर बैठ जाएं। देखिये ना ! आप अगर अपने किसी जिगरी दोस्त की कोई बात बार बार टालते रहें तो हो सकता है कि वोह आप से दोस्ती ही **ख़त्म** कर दे। लेकिन **अल्लाह** पाक बन्दों पर किस क़दर मेहरबान है कि लाख उस के फ़रमान की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करें। फिर भी वोह अपने बन्दों की फ़ेहरिस से ख़ारिज नहीं करता। वोह लुत्फ़ो करम फ़रमाता ही रहता है। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये ! जो बन्दे एह़सान फ़रामोशी का मुज़ाहरा कर रहे हैं। अगर वोह भी बत़ौरे सज़ा अपने एह़सानात उन से रोक ले तो उन का क्या बनेगा ? यक़ीनन उस की इ़नायत के बिग़ैर एक क़दम भी नहीं उठा सकता। अरे ! वोह अपनी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत हवा को जो बिल्कुल मुफ़्त अ़त़ा फ़रमा रखी है अगर चन्द लम्ह़ों के लिये रोक ले तो अभी लाशों के अम्बार लग जाएं !

क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बसा अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ की ताख़ीर में काफ़ी मस्लह़तें भी होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है, जब **अल्लाह** का कोई प्यारा **दुआ़** करता है, तो **अल्लाह** पाक जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से इर्शाद फ़रमाता है, "ठहरो ! अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।" और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ **दुआ़** करता है, फ़रमाता है, "ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! इस का काम जल्दी कर दो, ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ मक्रूह (या'नी ना पसन्द) है।

(کنز العمال، 2/39، حدیث: 3261)

वाकेआ़

हज़रते यह्या बिन सईद बिन क़त्तान (رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ) ने **अल्लाह** पाक को ख़्वाब में देखा, अ़र्ज़ की, इलाही ! मैं अक्सर **दुआ़** करता हूं। और तू क़बूल नहीं फ़रमाता ? हुक्म हुवा, ''ऐ यह्या ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूं। इस वासिते़ तेरी **दुआ़** की क़बूलिय्यत में ताख़ीर करता हूं।'' (احسن الوعاء، ص35)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अभी जो ह़दीसे पाक और ह़िकायत गुज़री उस में येह बताया गया है कि **अल्लाह** पाक को अपने नेक बन्दों की गिर्या व ज़ारी पसन्द है तो यूं भी बसा अवक़ात क़बूलिय्यते **दुआ़** में ताख़ीर होती है। अब इस मस्लह़त को हम कैसे समझ सकते हैं ! बहर ह़ाल जल्दी नहीं मचानी चाहिये । अह्सनुल विआ़अ सफ़ह़ा 33 में आदाबे दुआ़ बयान करते हुए ह़ज़रते रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :-

जल्दी मचाने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती

(दुआ़ के आदाब में से येह भी है कि) **दुआ़** के क़बूल में जल्दी न करे । ह़दीस शरीफ़ में है कि ख़ुदाए करीम तीन आदमियों की **दुआ़** क़बूल नहीं करता। एक वोह कि गुनाह की दुआ़ मांगे। दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त़ए़ रेह़्म हो। तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे कि मैं ने **दुआ़** मांगी अब तक क़बूल नहीं हुई। (مسلم، ص1463، حدیث:2735)

इस ह़दीस में फ़रमाया गया है कि ना जाइज़ काम की **दुआ़** न मांगी जाए कि वोह क़बूल नहीं होती। नीज़ किसी रिश्तेदार का ह़क़ ज़ाएअ़ होता हो ऐसी **दुआ़** भी न मांगें और **दुआ़** की क़बूलिय्यत के लिये जल्दी भी न

करें वरना **दुआ** क़बूल नहीं की जाएगी । अह्सनुल विआए लि आदाबिद्दुआअ पर **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़ाशिया तह़रीर फ़रमाया है। और उस का नाम ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह्सनिल विआ़अ रखा है। इसी ह़ाशिये में एक मक़ाम पर **दुआ़** की क़बूलिय्यत में जल्दी मचाने वालों को अपने मख़्सूस और निहायत ही इल्मी अन्दाज़ में समझाते हुए फ़रमाते हैं :-

अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते हो मगर....

सगाने दुन्या (या'नी दुन्यवी अफ़्सरों) के उम्मीदवारों (या'नी उन से काम निकलवाने के आरज़ू मन्दों) को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीद वारी (और इन्तिज़ार) में गुज़ारते हैं, सुब्ह़ो शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं, (धक्के खाते हैं) और वोह (अफ़्सरान) हैं कि रुख़ नहीं मिलाते, जवाब नहीं देते, झिड़कते, दिल तंग होते, नाक भौं चढ़ाते हैं, उम्मीद वारी में लगाया तो बेगार (बेकार मेह़नत) सर पर डाली, येह ह़ज़रत गिरेह (या'नी उम्मीद वार जेब) से खाते, घर से मंगाते, बेकार बेगार (फ़ुज़ूल मेह़नत) की बला उठाते हैं, और वहां (या'नी अफ़्सरों के पास धक्के खाने में) बरसों गुज़रें हुनूज़ (या'नी अभी तक गोया) रोज़े अव्वल (ही) है। मगर येह (दुन्यवी अफ़्सरों के पास धक्के खाने वाले) न उम्मीद तोडें, न (अफ़्सरों का) पीछा छोड़ें। और अह्कमुल ह़ाकिमीन, अक्रमुल अक्रमीन के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है ! और आए भी तो उक्ताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी, साह़िब ! पढ़ा तो था, कुछ असर न हुवा ! येह अह़मक़ अपने लिये इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर लेते

हैं । मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : يُسْتَجَابُ لِاَحَدِكُمْ مَالَمْ يُعَجِّلْ يَقُوْلُ دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجِبْ لِي **तरजमा :** "तुम्हारी दुआ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो येह मत कहो कि मैं ने दुआ की थी क़बूल न हुई ।" (بخاری،4/200، حدیث:6340)

बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर (या'नी बे क़ाबू) हो जाते हैं कि आ'माल व अदइय्या (या'नी अवराद और दुआओं) के असर से बे ए'तिक़ाद, बल्कि **अल्लाह** पाक के वा'दए करम से बे ए'तिमाद, وَالْعِيَاذُ بِاللهِ الْكَرِيْمِ الْجَوَاد । ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे ह़या ! बे शर्मो ! ज़रा अपने गरीबान में मुंह डालो । अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न करो तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओ (शरमाओ)गे, (कि) हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें ? और अगर गरज़ दीवानी होती है (या'नी मत़लब पड़ा तो) कह भी दिया और उस ने (अगर तुम्हारा काम) न किया तो अस्लन महल्ले शिकायत न जानोगे (या'नी इस बात पर शिकायत करोगे ही नहीं ज़ाहिर है ख़ुद ही समझते हो) कि हम ने (उस का काम) कब किया था जो वोह करता । **अब** जांचो, कि तुम मालिके अ़लल इत्लाक़ عَزَّوَجَلَّ के कितने अह़काम बजा लाते हो ? उस के हुक्म बजा न लाना और अपनी दरख़्वास्त का ख़्वाही न ख़्वाही (हर सूरत में) क़बूल चाहना कैसी बे ह़याई है !

ओ अह़मक ! फिर फ़र्क़ देख ! अपने सर से पाउं तक नज़रे ग़ौर कर ! एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं । तू सोता है और उस के मा'सूम

बन्दे (या'नी फ़िरिश्ते) तेरी हिफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और (फिर भी) सर से पाउं तक सिह्हत व आफ़िय्यत, बलाओं से हिफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फ़ुज़लात (या'नी जिस्म के अन्दर की गन्दगियों) का दफ़्अ़, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में ताक़त, आंखों में रोशनी। बे हिसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं। फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अ़ता न हों, किस मुंह से शिकायत करता है ? तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है ! तू क्या जाने कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस (ब ज़ाहिर न क़बूल होने वाली) दुआ़ ने दफ़्अ़ की, तू क्या जाने कि इस दुआ़ के इवज़ कैसा सवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर पहली, पिछली से आ'ला है। हां, बे ए'तिक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लईन ने तुझे अपना सा कर लिया। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰى (और **अल्लाह** की पनाह वोह पाक है और अ़ज़मत वाला)

ऐ ज़लील ख़ाक ! ऐ आबे नापाक ! अपना मुंह देख और इस अ़ज़ीम शरफ़ पर ग़ौर कर कि अपनी बारगाह में हाज़िर होने, अपना पाक, मुतआ़ली (या'नी बुलन्द) नाम लेने, अपनी त़रफ़ मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देता है। लाखों मुरादें इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम पर निसार।

ओ बे सब्रे ! ज़रा भीक मांगना सीख। इस आस्ताने रफ़ीअ़ की ख़ाक पर लौट जा। और लिपटा रह और **टिकटिकी** बंधी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं ! बल्कि पुकारने, उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त में

ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद कुछ याद न रहे, यक़ीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ महरूम न फिरेगा कि مَنْ دَقَّ بَابَ الْكَرِيْمِ اِنْفَتَحَ (या'नी जिस ने करीम के दरवाज़े पर दस्तक दी तो वोह इस पर खुल गया) وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْقُ (और तौफ़ीक़ **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से है) (ذیل المدعا لاحسن الوعاء، ص34تا37)

दुआ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है

ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) फ़रमाते हैं, ऐ अ़ज़ीज़ ! तेरा परवर्दगार फ़रमाता है, ﴿اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ﴾ (پ2، البقرۃ: 186) मैं दुआ मांगने वाले की दुआ क़बूल करता हूं जब मुझ से दुआ मांगे । ﴿فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ﴾ (پ23، الصّٰفّٰت: 75) हम क्या अच्छे क़बूल करने वाले हैं । ﴿اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (پ24، المؤمن: 60) मुझ से दुआ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा ।

पस यक़ीन समझ कि वोह तुझे अपने दर से महरूम नहीं करेगा और अपने वा'दे को वफ़ा फ़रमाएगा । वोह अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाता है : ﴿وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ﴾ (پ30، الضحیٰ: 10) साइल को न झिड़क । **आप** किस त़रह़ अपने ख़्वाने करम से दूर करेगा ? बल्कि वोह तुझ पर नज़रे करम रखता है । कि तेरी दुआ के क़बूल करने में देर करता है ।

(احسن الوعاء ص32،33)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه आ़शिकाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के दुआ मांगने वालों के मसाइल ह़ल होने के काफ़ी वाक़िआ़त सुनने को मिलते हैं ।

मदनी क़ाफ़िले में इ़र्क़ुन्निसा का इलाज हो गया

एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। हमारा मदनी क़ाफ़िला एक शहर में वारिद हुवा, शुरका में से एक इस्लामी भाई को इ़र्क़ुन्निसा का शदीद दर्द उठता था बेचारे शिद्दते दर्द से माहिये बे आब की त़रह़ तड़पते थे। एक बार दर्द के सबब रात भर सो न सके। आख़िरी दिन अमीरे क़ाफ़िला ने फ़रमाया : आइये ! सब मिल कर इन के लिये दुआ़ करते हैं। चुनान्चे दुआ़ शुरूअ़ हुई, उन इस्लामी भाई का बयान है : اَلْحَمْدُلِلّٰه दौराने दुआ़ ही दर्द में कमी आनी शुरूअ़ हो गई और कुछ देर के बा'द **इ़र्क़ुन्निसा का दर्द बिल्कुल जाता रहा।** اَلْحَمْدُلِلّٰه येह बयान देते वक़्त काफ़ी अ़रसा हो चुका है वोह दिन आज का दिन मुझे फिर कभी **इ़र्क़ुन्निसा** की तक्लीफ़ नहीं हुई। اَلْحَمْدُلِلّٰه येह बयान देते वक़्त मुझे अ़लाक़ाई **मदनी क़ाफ़िला** ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से मदनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने की ख़िदमत मिली हुई है।

गर हो इ़र्क़ुन्निसा, या आ़रिज़ा कोई सा — पाओगे सिह़्ह़तें, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां, और परेशानियां — होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िले की बरकत से इ़र्क़ुन्निसा जैसी मूज़ी बीमारी से नजात मिल गई। इ़र्क़ुन्निसा की पहचान येह है कि इस में चड्ढे (या'नी रान के जोड़) से ले कर पाउं के टख़्ने तक शदीद दर्द होता है येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता।

''दुआ मोमिन का हथियार है'' के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से दुआ मांगने के 17 मदनी फूल

(तक़रीबन तमाम मदनी फूल अह्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़ मअ़ शर्ह़ ज़ैलिल मुद्दआ़ लि अह्सनिल विआ़अ, मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना से लिये गए हैं)

﴾1﴿ हर रोज़ कम अज़ कम बीस बार **दुआ़** करना वाजिब है। اَلْحَمْدُلِلّٰه नमाज़ियों का येह वाजिब, नमाज़ में सूरतुल फ़ातिह़ा से अदा हो जाता है कि ﴿اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴾ **''तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हम को सीधा रास्ता चला'' भी **दुआ़** और ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴾ **''तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का'' कहना भी **दुआ़** है। (स. 123) ﴾2﴿ **दुआ़** में ह़द से न बढ़े। मसलन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना। नीज़ दोनों जहां की सारी भलाइयां और सब की सब ख़ूबियां मांगना भी मन्अ़ है कि इन ख़ूबियों में मरातिबे अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام भी हैं जो नहीं मिल सकते। (स. 80,81) ﴾3﴿ जो मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) या क़रीब ब मुह़ाल हो उस की **दुआ़** न मांगे। लिहाज़ा हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती आ़फ़िय्यत मांगना कि आदमी उ़म्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़े येह मुह़ाले आ़दी की **दुआ़** मांगना है। यूंही लम्बे क़द के आदमी का छोटा क़द होने या छोटी आंख वाले का बड़ी आंख की **दुआ़** करना मम्नूअ़ है कि येह ऐसे अम्र की **दुआ़** है जिस पर क़लम जारी हो चुका है। (स. 81) ﴾4﴿ गुनाह की **दुआ़** न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए कि गुनाह की त़लब करना भी गुनाह है। (स. 82) ﴾5﴿

क़त्ए़ रेह़्म (मसलन फ़ुलां रिश्तेदारों में लड़ाई हो जाए) की **दुआ़** न करे। (स. 82) ❬6❭ **अल्लाह** पाक से सिर्फ़ ह़क़ीर चीज़ न मांगे कि परवर्दगार ग़नी है बल्कि अपनी तमाम तवज्जोह उसी की त़रफ़ रखे और हर चीज़ का उसी से सुवाल करे। (स. 84) ❬7❭ रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की **दुआ़** न करे। ख़याल रहे कि दुन्यवी नुक़्सान से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मुज़र्रत (या'नी दीनी नुक़्सान) के ख़ौफ़ से जाइज़ (स. 85,87) ❬8❭ बिला ज़रूरते शर्ई किसी के मरने और ख़राबी (बरबादी) की **दुआ़** न करे, अलबत्ता अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और (उस के) जीने से दीन का नुक़्सान हो या किसी ज़ालिम से तौबा और ज़ुल्म छोड़ने की उम्मीद न हो और उस का मरना, तबाह होना मख़्लूक़ के ह़क़ में मुफ़ीद हो तो ऐसे शख़्स पर बद दुआ़ करना दुरुस्त है। (स. 87) ❬9❭ किसी मुसल्मान को येह बद दुआ़ न दे कि ''तू काफ़िर हो जाए'' कि बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक (ऐसी **दुआ़** मांगना) कुफ़्र है और तह़क़ीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे तो बेशक कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसल्मान की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) ह़राम है, ख़ुसूसन येह बद ख़्वाही (कि फ़ुलां का ईमान बरबाद हो जाए) तो सब बद ख़्वाहियों से बदतर है। (स. 90) ❬10❭ **किसी** मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मल्ऊ़न न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे। (स. 90) ❬11❭ **किसी** मुसल्मान को येह बद दुआ़ न दे कि ''तुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू (भाड़ और) आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो।'' कि ह़दीस शरीफ़ में इस

की मुमानअ़त वारिद है। (स. 100) ﴾12﴿ जो काफ़िर मरा उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत ह़राम व कुफ़्र है। (स. 100) ﴾13﴿ येह **दुआ** करना, "ख़ुदाया! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे।" जाइज़ नहीं कि इस में उन अह़ादीसे मुबारका की तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) होती है जिन में बा'ज़ मुसल्मान का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा। (स. 106) अलबत्ता यूं **दुआ** करना "सारी उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत (या'नी बख़्शिश) हो या सारे मुसल्मानों की मग़्फ़िरत हो" जाइज़ है। (स. 103) ﴾14﴿ अपने लिये और अपने दोस्त अह़बाब, अहलो माल और औलाद के लिये बद दुआ न करे, क्या मा'लूम कि क़बूलिय्यत का वक़्त हो और बद दुआ का असर ज़ाहिर होने पर नदामत हो। (स. 107) ﴾15﴿ जो चीज़ ह़ासिल हो (या'नी अपने पास मौजूद हो) उस की **दुआ** न करे मसलन मर्द यूं न कहे, "या **अल्लाह** पाक मुझे मर्द कर दे" मसलन इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़ बनाना) है। अलबत्ता ऐसी **दुआ** जिस में शरीअ़त के हुक्म की ता'मील या आ़जिज़ी व बन्दगी का इज़्हार या परवर्दगार और मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत या दीन या अहले दीन की त़रफ़ रग़बत या कुफ़्रो काफ़िरीन से नफ़रत वग़ैरा के फ़वाइद निकलते हों वोह जाइज़ है अगर्चे इस अम्र का ह़ुसूल यक़ीनी हो। जैसे दुरूद शरीफ़ पढ़ना, वसीले की, सिराते़ मुस्तक़ीम की **अल्लाह** व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों पर ग़ज़ब व ला'नत की **दुआ** करना। (स. 108) ﴾16﴿ **दुआ** में तंगी न करे मसलन यूं न मांगे या **अल्लाह** पाक तन्हा मुझ पर रह़्म फ़रमा या सिर्फ़ मुझे और मेरे फुलां फुलां दोस्त को ने'मत बख़्श। (स. 109) बेहतर येह है कि सब मुसल्मानों को **दुआ** में शामिल कर ले इस का एक फ़ाएदा

येह भी होगा कि अगर ख़ुद उस नेक बात का हक़दार न भी हुवा तो अच्छे मुसल्मानों के तुफ़ैल पा लेगा। ﴾17﴿ हुज्जतुल इस्लाम हज़रते इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मज़बूत अ़क़ीदे के साथ **दुआ** मांगे और क़बूलिय्यत का यक़ीन रखे। (احیاء العلوم، 1/770)

15 क़ुरआनी दुआएं

﴾1﴿ ﴿رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ﴿۲۰۱﴾﴾ (پ2، البقرۃ:201)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान :[1] ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

﴾2﴿ ﴿رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ﴾ (پ3، البقرۃ:286)

तरजमा : ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें।

﴾3﴿ ﴿رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ﴾ (پ3، البقرۃ:286)

तरजमा : ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था।

﴾4﴿ ﴿رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ﴿۸﴾﴾ (پ3، اٰل عمرٰن:8) **तरजमा :** ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला।

﴾5﴿ ﴿رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ﴿۱۶﴾﴾ (پ3، اٰل عمرٰن:16)

तरजमा : ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमारे गुनाह मुआ़फ़ कर और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

1... अगली तमाम आयात का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से लिया गया है।

﴾6﴿ ﴿رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ﴾ (پ4، اٰل عمرٰن:193)

तरजमा : ऐ रब हमारे तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां महूव फ़रमा (मिटा) दे और हमारी मौत अच्छों के साथ कर।

﴾7﴿ ﴿رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ﴾ (پ8، الاعراف:47)

तरजमा : ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर।

﴾8﴿ ﴿رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِیْنَ﴾ (پ9، الاعراف: 126)

तरजमा : ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसल्मान उठा।

﴾9﴿ ﴿رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ﳓ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ﴾ (پ13، ابرٰھیم:40)

तरजमा : ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब और हमारी दुआ सुन ले।

﴾10﴿ ﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ﴾ (پ13، ابرٰھیم:41)

तरजमा : ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन हि़साब क़ाइम होगा।

﴾11﴿ ﴿رَّبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ﴾ (پ18، المؤمنون :118)

तरजमा : ऐ मेरे रब बख़्श दे और रहूम फ़रमा और तू सब से बरतर रहूम करने वाला।

﴾12﴿ ﴿رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا﴾ (پ19، الفرقان:74)

तरजमा : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना।

﴾13﴿ ﴿رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ﴾ (پ28، الحشر:10) **तरजमा :** ऐ हमारे रब हमें

बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़्म वाला है।

﴿14﴾ ﴿رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ﴾ (پ18، المؤمنون:97)

तरजमा : ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयात़ीन के वस्वसों से।

﴿15﴾ ﴿رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا﴾ (پ15، بنی اسراءیل:24)

तरजमा : ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (छोटी उ़म्र) में पाला।

"कुरआन" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से आयतुल कुरसी के 4 फ़ज़ाइल

﴿1﴾ **ह़दीस** शरीफ़ में है कि येह आयत कुरआने मजीद की आयतों में बहुत ही **अ़ज़मत** वाली आयत है। (در منثور، 6/2) ﴿2﴾ **ह़ज़रते** उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **ह़ुस्ने अख़्लाक़** के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू मुन्ज़िर ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि कुरआने पाक की जो आयतें तुम्हें याद हैं उन में कौन सी आयत **अ़ज़ीम** है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : ﴿اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ﴾ फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया : ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हें इ़ल्म मुबारक हो। (مسلم، ص405، حدیث:810) ﴿3﴾ **मुस्तदरक** की एक रिवायत में है कि "सूरए बक़रह" में एक आयत है जो कुरआने पाक की तमाम आयतों की

सरदार है, वोह आयत जिस घर में पढ़ी जाए उस घर से शैत़ान निकल जाता है और वोह **आयतुल कुरसी** है । (مستدرک للحاکم،2/647،حدیث:3080)

﴿4﴾ **अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर फ़रमाते हुए सुना जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द **आयतुल कुरसी** पढ़े उसे जन्नत में दाख़िल होने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकती और जो कोई रात को सोते वक़्त इसे पढ़ेगा **अल्लाह पाक** उसे, उस के घर को और आस पास के घरों को **महफ़ूज़** फ़रमा देगा ।

(شعب الایمان،2/458،حدیث:2395)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आयतुल कुरसी की पांच बरकतें

प्यार प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी पढ़ेगा उस को ह़स्बे ज़ैल बरकतें नसीब होंगी ।

﴿1﴾ वोह मरने के बा'द जन्नत में जाएगा । ﴿2﴾ اِنْ شَآءَاللّٰہ वोह शैत़ान और **जिन्न** की तमाम शरारतों से महफ़ूज़ रहेगा । ﴿3﴾ اِنْ شَآءَاللّٰہ अगर मोह़ताज होगा तो चन्द दिनों में उस की मोह़ताजी और ग़रीबी दूर हो जाएगी ।

﴿4﴾ जो शख़्स सुब्ह़ व शाम और बिस्तर पर लेटते वक़्त **आयतुल कुरसी** और इस के बा'द की दो आयतें خٰلِدُوْن तक पढ़ा करेगा वोह चोरी, ग़र्क़ आबी (पानी में डूबने) और जलने से महफ़ूज़ रहेगा । ﴿5﴾ اِنْ شَآءَاللّٰہ अगर सारे मकान में किसी ऊंची जगह पर लिख कर इस का कत्बा आवेज़ां कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ उस घर में कभी फ़ाक़ा न होगा बल्कि रोज़ी में

बरकत और इज़ाफ़ा होगा और उस मकान में कभी चोर न आ सकेगा।
اِنْ شَآءَاللّٰه (जन्नती ज़ेवर, स. 589)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस

दुआ की अहम्मिय्यत.....1
दुआ दाफ़ेए बला है.....2
इबादात में दुआ का मक़ाम.....2
दुआ के तीन फ़ाएदे.....2
"या अ़फ़ुव्वु" के पांच हुरूफ़ की
निस्बत से 5 मदनी फूल.....3
न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?..4
नमाज़ न पढ़ना तो गोया
ख़ता ही नहीं.....4
जिस दोस्त की बात न मानें.....5
क़बूलिय्यते दुआ में ताख़ीर का
एक सबब.....6
हिकायत.....7
जल्दी मचाने वाले की
दुआ क़बूल नहीं होती.....7
अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के
खाते हो मगर.....8
दुआ की क़बूलिय्यत में
ताख़ीर तो करम है.....11
मदनी क़ाफ़िले में इर्क़ुन्निसा का
इलाज हो गया.....12
दुआ मांगने के 17 मदनी फूल.....13
15 क़ुरआनी दुआएं.....16
आयतुल कुरसी के 4 फ़ज़ाइल.....18
आयतुल कुरसी की पांच बरकतें.....19

पसन्दीदा दुआ

सब से आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के लिये दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया, उस के लिये रह़मत का दरवाज़ा खोल दिया गया। **अल्लाह** पाक से किये जाने वाले सुवालों में से पसन्दीदा सुवाल आफ़ियत का है। जो मुसीबतें नाज़िल हो चुकीं और जो नाज़िल नहीं हुईं उन सब में दुआ से नफ़्अ़ होता है, तो ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! दुआ करने को (अपने ऊपर) लाज़िम कर लो।

(ترمذی، 5/321، حدیث:3559)